Postal Regn. - RTK/010/2020-22
RNI - HRHIN/2003/10425

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

दिसम्बर 2024 (प्रथम)

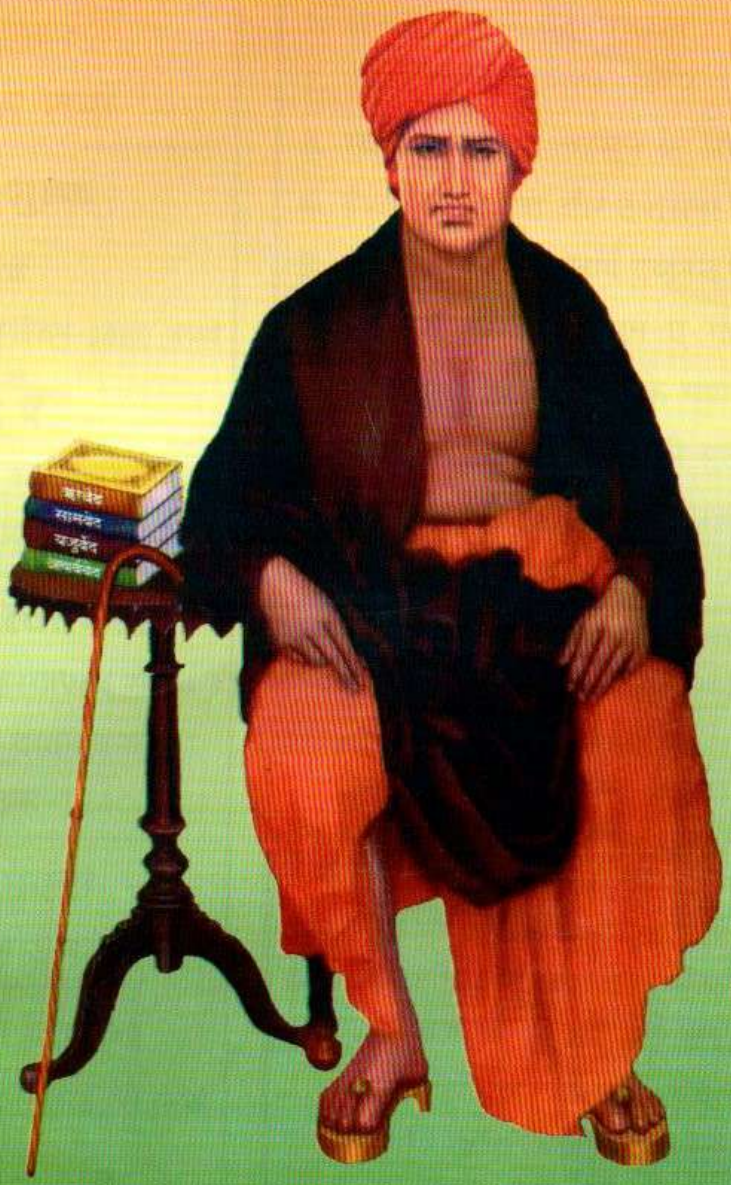

Email : aryapsharyana@yahoo.in

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Visit us : www.apsharyana.org

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,125
विक्रम संवत् 2081
दयानन्दाब्द 201

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 20 अंक 21

सम्पादक :
उमेद सिंह शर्मा

पत्रिका-शुल्क
देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये
विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सह-सम्पादक
आचार्य सोमदेव

सम्पादकीय विभाग
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

(दिसम्बर, 2024 प्रथम)
1 से 15 दिसम्बर, 2024 तक

इस अंक में....

1. सम्पादकीय—वेद-प्रवचन 2
2. ईश्वर पर अविश्वास क्यों ? 3
3. स्वास्थ्य चर्चा—लहसुन के अनेक लाभ 4
4. ईश्वर की रचना और उपासना 5
5. ईश्वर के संबंध में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचार 7
6. हम क्यों हारे ? दास्तान-ए-गद्दारी (11) 10
7. कविता—देव दयानन्द के गुण गाओ 11
8. महर्षि दयानन्द सरस्वती जी युग परिवर्तन के सम्पूर्ण वैचारिक क्रान्ति के प्रथम सर्जनहार थे 12
9. समाचार-प्रभाग 14

आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं।

—सम्पादक

सम्पादकीय...

वेद-प्रवचन

❑ संकलन—उमेद शर्मा, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

वेदमन्त्र

अयमस्मि जरितः पश्य मेह विश्वा जातान्यभ्यस्मि मह्ना।
ऋतस्य मा प्रदिशो वर्धयन्त्यादर्दिरो भुवना दर्दरीमि॥

(ऋग्वेद मण्डल 8, सूक्त 100, मंत्र 4)

अन्वय-हे जरितः अयं अस्मि। मा (माम्) इह पश्य। मह्ना (महत्त्वेन) विश्वानि जातानि अभि-अस्मि। ऋतस्य प्रदिशः (उपदेष्टारः) मा (माम्) वर्धयन्ति। आदर्दिरः (अहम्) भुवनानि दर्दरीमि (भृशं विदारयामि)।

अर्थ-(जरितः) हे स्तुति करने वाले मनुष्य! (अयम् अस्मि) यह मैं प्रत्यक्षरूप से हूँ, (मा इह पश्य) मुझे इस संसार के बीच में देखने का यत्न कर, (मह्ना) अपनी बड़ी शक्ति द्वारा (विश्वानि जातानि) समस्त उत्पन्न हुई सृष्टि पर (अभि-अस्मि) मैं अधिष्ठाता-रूप से विद्यमान हूँ। (ऋतस्य प्रदिशः) ऋत का विशेषरूप से उपदेश करने वाले विद्वान् लोग (माम् वर्धयन्ति) मुझे बढ़ाते हैं (glorify me) (आदर्दिरः) नाशा करने वाले की शक्ति रखने वाला मैं (भुवनानि) समस्त सृष्टि को अन्त में (दर्दरीम) अत्यन्त सूक्ष्म रूप में विदीर्ण या छिन्न-भिन्न कर देता हूँ।

व्याख्या-इस वेदमन्त्र में ईश्वर के तीन कर्मों का वर्णन है—पहला उत्पन्न करना, दूसरा पालन करना, तीसरा संहार करना। इससे प्रकट होता है कि पौराणिक ग्रन्थों में उत्पन्न करने, पालन करने और संहार करने के तीन कामों के लिए तीन अलग-अलग देवों अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु और महादेव की जो कल्पना की गई वह अवैदिक और भ्रममूलक है। ईश्वर कहता है कि मैं ही अपनी शक्ति द्वारा तीनों काम करता हूँ।

वेदान्त दर्शन में महर्षि व्यास ने पहले सूत्र में यह प्रतिज्ञा की—**'अथातो ब्रह्म जिज्ञासा'**—अब हम ब्रह्म की जिज्ञासा करेंगे अर्थात् यह जानना चाहते हैं कि ब्रह्म क्या है? अगले सूत्र में ब्रह्म का स्थूलरूप से वर्णन किया, जिससे जिज्ञासु आगे चलकर सूक्ष्म प्रश्नों को समझ सकें। वह सूत्र यह है—

जन्माद्यस्य यतः। —वेदान्तसूत्र 1.1.2

अर्थात् ब्रह्म वह महती शक्ति है जिससे इस संसार का जन्म, पालन और लय होता है। सृष्टि की इन तीन बातों को समझना ही ब्रह्मजिज्ञासा करना है।

जिज्ञासा का अर्थ है **'ज्ञातुं इच्छा'**, जानने की इच्छा करना। जो मनुष्य किसी वस्तु को जानने की इच्छा रखता है उसको आरम्भ और अन्त दोनों पर दृष्टि डालनी होगी। प्रश्न केवल इतना ही नहीं है कि आप किसको जानना चाहते हैं। यह तो आपकी जिज्ञासा का अन्त होगा। 'आरम्भ' क्या है? यह देखना सबसे अधिक आवश्यक है। वेदान्त (वेद के अन्त) को ठीक-ठीक समझने के लिए वेदादि (वेद के आदि) को समझने की आवश्यकता है। प्रश्न केवल इतना ही नहीं है कि आपकी यात्रा का आखिरी स्टेशन कौन-सा है? इससे भी पहला प्रश्न यह है कि आप जहाँ से आरम्भ करेंगे वह पहला स्टेशन कहाँ है और कितनी दूर है। धार्मिक सम्प्रदायों में यह तो सब कहते हैं कि हमारे जीवन का ध्येय मोक्ष है, यह तो हुई वेद के **अन्त** (वेदान्त) की बात, परन्तु यह कोई नहीं देखना चाहता कि वह इस समय जीवन के किस स्टेशन पर है। 'वेदादि' की मीमांसा के बिना 'वेदान्त' की मीमांसा करना अनुचित ही नहीं व्यर्थ भी है। धार्मिक जगत् की सैकड़ों कलहों के मूल में यही भूल है। जिज्ञासा का ठीक मार्ग यह है—

(1) ज्ञात से अज्ञात की ओर चलो। (Proceed from known to unknown)

(2) निकट से दूर की ओर चलो। (Proceed from near to far)

(3) स्थूल से सूक्ष्म की ओर चलो। (Proceed from concrete to abstract)

ये नियम देखने में तो अत्यन्त साधारण, सरल और स्पष्ट प्रतीत होते हैं परन्तु जिज्ञासुओं की ओर से जिज्ञासा-क्षेत्र में इन नियमों की उपेक्षा की जाती है। क्रमशः....

ईश्वर पर अविश्वास क्यों?

❑ संकलन—कन्हैयालाल आर्य, संरक्षक—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

हम अपने जीवन में देखते हैं कि बड़े-बड़े सेठों ने मन्दिर बनवा रखे हैं या उनके बड़े-बड़े मकान हैं। उनमें एक कोने में उन्होंने मन्दिर बनवा दिया है। उन मन्दिरों में उन्होंने अपने-अपने देवता बिठा रखे हैं अर्थात् परमात्मा सर्वत्र था, हमने उसे एक छोटे से स्थान पर स्थित कर दिया है। मकान के अन्दर रहता है तो उस मकान से छोटा ही होगा। जो सर्वत्र था उसे हमने एकत्र कर लिया है। वह मकान जिसमें हम स्वयं रहते हैं बड़ा अच्छा है, ऊँचा है, उसमें प्रत्येक प्रकार की सुविधाएँ हैं, परन्तु हमने अपने भगवान् को सीढ़ियों के नीचे या ऐसे स्थान पर उन्हें रख रखे हैं, जहाँ न तो आप स्वयं और न ही पुजारी जी खड़े हो सकते हैं, वे बेचारे पुजारी जी भी झुके-झुके ही सारे कार्य कर लेते हैं।

बड़े-बड़े सेठ बड़े-बड़े मन्दिर बनवाते हैं। जब कोई पूछता है, ''साहब! यह किसका मन्दिर है तो कहा जाएगा यह अमुक सेठ का मन्दिर है। कोई उसे राधा-कृष्ण, सीता-राम का मन्दिर न कहकर सेठ जी के नाम से मन्दिर जाना जाता है। ऐसा ही एक देहली में मन्दिर है उसे 'बिड़ला मन्दिर' कहा जाता है उस मन्दिर में किसकी मूर्ति रखी हुई है, इस बात से कोई मतलब नहीं, बल्कि 'बिड़ला मन्दिर' है ऐसा कहकर हम अपने-अपने भगवान् को कितना सम्मान दे रहे हैं? यह देखने की बात है और जब यह पूछा जाता है कि यह देवता किसके हैं? तो उत्तर मिलता है कि सेठ जी के हैं—तो जो सबके स्वामी थे, अब हम उसके स्वामी हो गये हैं। काम उल्टा हो गया। अब सेठ जी अपने भगवान् की पूजा करते हैं और रक्षा भी करते हैं। जो सब जगत् का रक्षक था, हम अब उसको ताला लगाकर उसके रक्षक बन गये हैं। अब पुजारी जी वा सेठ जी की इच्छा प्रधान है, जब चाहें मन्दिर खोलें, जब चाहें बन्द कर दें, खाना चाहें एक बार खिलायें और चाहें चार बार। भगवान् जी अब कोई शिकायत नहीं कर सकते, क्योंकि भगवान् सेठ जी की प्रजा हो गए हैं। वह मालिक के सामने कैसे बोलें।

बहुत-से पुजारी अपने नारायण को डब्बी में बन्द कर ऊपर से कपड़े आदि से गले में लटका लेते हैं जैसे कि वानरी अपने बच्चे को गले में लटका लेती है, वैसे पुजारियों के गले में भी लटकते हैं। जब कोई मूर्ति को तोड़ता है तब 'हाय-हाय' कर छाती पीट बकते हैं कि सीता-राम जी, राधा-कृष्ण जी और पार्वती-शिवजी को दुष्टों ने तोड़ डाला।

अब दूसरी मूर्ति मँगवाकर जो अच्छे शिल्पी ने संगमरमर की बनाई हो, स्थापित कर पूजनी चाहिये, नारायण को घी के बिना भोग नहीं लगता, बहुत नहीं तो थोड़ा-सा अवश्य भेज देना, इत्यादि बातें इन पर ठहराते हैं। ये दुष्ट पुजारी रामलीला वा रासलीला के अन्त में सीता-राम व राधा-कृष्ण से भीख मँगवाते हैं, जहाँ मेला-ठेला होता है वहाँ किसी छोकरे पर मुकुट धर कन्हैया बना मार्ग में बिठाकर भीख मँगवाते हैं, इत्यादि बातों को आप विचार कर लीजिये कि कितने बड़े शोक की बात है। भला कहो तो सीता-राम आदि ऐसे दरिद्र और भिक्षुक थे? यह उपहास और निन्दा नहीं तो क्या है?

भला, जिस समय ये महापुरुष विद्यमान थे, उस समय सीता, रुक्मिणी, लक्ष्मी, पार्वती को सड़क पर वा किसी मकान में खड़ी कर पुजारी कहते थे कि आओ इनके दर्शन करो और भेंट पूजा धरो तो सीता-रामादि इन मूर्खों के कहने से ऐसा काम कभी न करते और न करने देते। जो कोई ऐसा उपहास उनका करता, तो उसको बिना दण्ड दिये कभी न छोड़ते? इसमें कोई सन्देह नहीं है कि आर्यावर्त की प्रतिदिन मानहानि और पाषाणादि मूर्तिपूजकों का पराजय इन्हीं कर्मों से होता है, क्योंकि पाप का फल दुःख है। इन्हें पाषाणादि मूर्तियों के विश्वास से बहुत-सी हानि हो गई जो न छोड़ोगे तो यह हानि प्रतिदिन अधिक-अधिक होती जायेगी।''

क्रमशः अगले अंक में....

स्वास्थ्य-चर्चा

लहसुन के अनेक लाभ

गतांक से आगे....

लक्षण-ये कभी-कभी एन्फ्लूएंजा, फेफड़ों के रोग, मस्तिष्क विकार के कारण भी उत्पन्न हो जाती हैं। हैजा, टाइफाइड, उदर रोग, मस्तिष्क की रसौली आदि की अन्तिम अवस्था में भी हिचकियाँ आया करती हैं। कई बार इसके कारण फेफड़ों तथा मस्तिष्क में विकार उत्पन्न हो जाते हैं।

उपचार-लहसुन का रस स्त्री के दूध में मिलाकर सूंघने से हिचकी आनी बन्द हो जाती है।

नाक में दो-दो बूंद लहसुन के रस की टपकाने से साधारण हिचकी आनी बन्द हो जाती है।

पांच कलियां लहसुन, एक छोटी गांठ प्याज, जरा-सा अदरक, दो दाने कालीमिर्च, चुटकी भर जीरा, 2-4 पत्ते पुदीने के, चार दाने किशमिश के, नींबू के रस में पीसकर इस चटनी में चाटने से हिचकी आनी बन्द हो जाती है।

चार-पांच इकपोतिया लहसुन छीलकर उसी मात्रा में अदरक भी छील काट डालें। उतना ही मात्रा में प्याज भी शामिल कर लें। इसी में पुदीने के कुछ पत्ते, काली मिर्च, नमक और जीरा डाल दें। इन्हें नींबू के रस में पीस डालिये। कुछ दाने किशमिश के भी मिला दीजिए। इस चटनी का जायका लेते-लेते ही हिचकी रफूचक्कर हो जाएगी। साधारण हिचकी तो नाक में दो-दो बूंद लहसुन रस टपकाते ही जाती रहती है।

फेफड़ों के रोग

फेफड़ों में खराबी-लहसुन का फेफड़ों पर चमत्कारी प्रभाव पड़ता है। क्षय (दमा) या राजयक्ष्मा (तपेदिक) फेफड़ों को ही निकम्मा करते हैं और लहसुन खाने वाले कम-से-कम इन घातक रोगों से जरूर बचे रहते हैं। रोगाणुओं को नष्ट करने में लहसुन के रस में ऐसा उड़नशील तेल होता है जो शरीर में शिर से पांव तक तुरन्त फैल जाता है और फेफड़े, जिगर, गुर्दे और त्वचा को निर्विकार करके ही शान्त होता है। टी.बी. अगर प्रारम्भिक अवस्था में हो तो लहसुन उसे तुरन्त उखाड़ देता है।

फेफड़ों में पानी-आम तौर पर इसे **'प्लुरिसी'** भी कहते हैं। फेफड़ों की झिल्ली में पानी आने से बुखार भी रहने लगता है। लहसुन के तेल की मालिश सुबह-शाम कीजिए और दस-दस मिनट कीजिए ताकि लहसुन की गंध त्वचा के छिद्रों में उतरकर फेफड़ों की झिल्ली तक असर कर सके। तेल बनाने की विधि यह है कि एक गांठ लहसुन की कलियां छीलकर पचास ग्राम सरसों के तेल में काट कुतरकर डालें आंच पर जला दें। इस तरह कलियों का तेल भी सरसों के तेल में उतर आएगा। अब कलियां निकालकर फेंक दें तेल छानकर मालिश शुरू कर दें।

खांसी

कारण-खांसी स्वयं में कोई रोग नहीं है, बल्कि किसी अन्य रोग का लक्षण है। सामान्य रूप से श्वास नली की खराबी के कारण खांसी हो जाती है। यह जुकाम बिगड़ने पर या वात, पित्त अथवा कफ के बिगड़ने के कारण भी हो जाती है। इसके अन्य मुख्य कारण-ऋतुपरिवर्तन, प्रदूषण, धूल-धुएं से श्वास में अवरोध, जुकाम बिगड़ने, ठण्ड रहने, तीव्र गन्ध के कारण, कब्ज, स्वरयन्त्र में विकार आदि होते हैं। खांसी दो प्रकार की होती है। सूखी व तर (बलगमी) खांसी।

लक्षण-सूखी खांसी में बलगम नहीं निकलता। बहुत ज्यादा खांसने पर थोड़ा-सा बलगम निकलता है, जिसके कारण छाती में जकड़न, हृदय और पसलियों में दर्द, कभी-कभी सिरदर्द या बुखार भी हो जाया करता है। बलगमी खांसी में जरा-सा खांसने पर आराम से अधिक मात्रा में बलगम निकलता है। उल्टी हो जाना, भोजन में अरुचि, आलस्य, शरीर में अकड़ाव आदि का अनुभव होता है। अधिक बलगम निकलना अच्छा नहीं माना जाता।

उपचार-एक चम्मच शुद्ध शहद में लहसुन के रस की चार-पांच बूंदें मिलाकर दिन में तीन-चार बार रोगी को अंगुली से चटाते रहने से 2-3 दिन में पूरा आराम आ जाता है।

लहसुन की गांठ को उपलों पर जलाकर उसकी भस्म बना लें। यह एक चुटकी भस्म एक चम्मच शहद में मिलाकर दिन में तीन बार चाटने से पुरानी से पुरानी खांसी भी मिट जाती है। यदि शीत-पित्त के कारण बलगमी खांसी हो तो थोड़ी-सी वैसलीन में दस बूंद लहसुन के रस को मिलाकर मालिश करने से आराम मिलता है। क्रमशः....

ईश्वर की रचना और उपासना

❑ प्रेम प्रकाश वानप्रस्थ, आर्यकुटी, धूरी-14024, (पंजाब-भारत)

रचयिता की रचना एक अद्भुत कमाल है। संसार में हम सब एक नियम देखते हैं कि कोई वस्तु बिना बनाए नहीं बनती। ये सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश, समुद्रों की गहराई और पर्वतों की ऊँचाई, यह सब देखकर यह मानना ही पड़ता है कि इन सबका कोई बनाने वाला है, जिसे ईश्वर कहते हैं, क्योंकि वह ऐश्वर्यों का दाता व निर्माता है, इसी गुण के आधार पर उसका 'ईश्वर' नाम हुआ। अन्यथा उसका मुख्य नाम 'ओ३म्' है।

कुछ लोग ईश्वर को नहीं मानते—सृष्टि में जो वस्तु बनती है, वह अवश्य बिगड़ती है। जो जन्मता है वह अवश्य मरता है। जमीन घूमती है, जिससे दिन-रात्रि बनते हैं। वृक्षों पर फल-फूल लगने लगते हैं, परन्तु जो फल जहाँ लगना चाहिए, वहीं लगा है, बैर, लीची, अंगूर, अमरूद आदि ऊपर लगे हैं और बड़े-बड़े पेठे, तरबूज आदि नीचे लगे हैं, क्योंकि यदि ऐसा न होता तो थोड़ी-सी तेज वायु चलने पर कोई तरबूज, पेठा टूटकर नीचे गिर जाता तो मनुष्य का सिर फट जाता। इन नियमों को नियन्त्रण कर रहा है, उसे ईश्वर कहते हैं।

ईश्वर कण-कण में व्यापक है—भगवान् कोई ऐसा सेठ नहीं, जो सृष्टि बनाकर कहीं चला गया हो। वह निराकार होने से कण-कण में व्यापक है। इसीलिए सारी सृष्टि उसके नियम का पालन कर रही है। यदि वह सब वस्तुओं में व्यापकता नहीं होता तो सारे नियम बिगड़ जाते। सृष्टि के आदि में बने मनुष्य, पशु-पक्षी, जलचर और फल, फूल आदि आज भी वैसे ही हैं, जैसे सृष्टि के आदि में बने थे। उसमें कोई अन्तर नहीं आया और न ही किसी व्यवस्था में खराबी आई। यही उसकी व्यापकता का सबसे बड़ा प्रमाण है, परन्तु मनुष्य की बनाई सब चीजें इसलिए खराब होती हैं, क्योंकि वह वस्तुओं में व्यापक नहीं।

रचना में अन्तर—इस विशाल सृष्टि की रचना करके भगवान् ने कमाल किया है। सृष्टि के सारे मनुष्य मिलकर भी एक चाँद नहीं बना सकते, परन्तु मानव ने भी अपनी रचना में कमाल किया है, जैसे वर्तमान में सुविधाएँ टेलीफोन, टी.वी., वायुयान, राकेश आदि गर्मी में बर्फ, सर्दी में हीटर, बड़े-बड़े समुद्री जहाज और आजकल कम्प्यूटर ने तो ऐसा कमाल किया, लोगों को आश्चर्य में डाल दिया है, परन्तु भगवान् की रचना और मनुष्य की रचना में एक मौलिक अन्तर है। भगवान् ने जिन वस्तुओं की मनुष्य को आवश्यकता है, उन वस्तुओं में ही उन वस्तुओं को पैदा करने की शक्ति प्रदान कर दी, जैसे गेहूँ का दाना, सैकड़ों गेहूँ के दाने पैदा कर सकता है, मनुष्य मनुष्य पैदा कर सकता है, गाय गाय पैदा कर सकती है, आदि-आदि। परन्तु मनुष्य का बनाया रेल का इंजन अपने जैसा रेल का इंजन पैदा नहीं कर सकता, घड़ी घड़ी पैदा नहीं कर सकती और सूई अपने जैसी सुई भी नहीं बना सकती।

रचना में विशेषता—भगवान् के नियमों को जानकर मनुष्य ने रचना तो की है। जैसे कुर्सी, मेज, कार, रेल का इंजन, वायुयान आदि-आदि बनाए, परन्तु कुर्सी की लकड़ी को नहीं बनाया, लोहे को नहीं बनाया, रूई को नहीं बनाया, कोयले को नहीं बनाया, अग्नि को नहीं बनाया, जल को नहीं बनाया, पेट्रोल को नहीं बनाया, परन्तु रेल के इंजन को चलाया। इसीलिए महर्षि दयानन्द जी महाराज आर्यसमाज के प्रथम नियम में कहते हैं कि "सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।" जैसे भगवान् ने सूर्य को बनाया, जिससे बनाया वह प्रकृति (परमाणु) है जिसके लिए बनाया, वह 'जीव' है। "बनी वस्तु जहाँ बनाने वाले का पता देती है, वहाँ यह भी बताती है कि इसका कोई उपयोग करने वाला भी है। अतः तीन पदार्थों को अनादि मानना सार्वजनिक सार्वकालिक सत्य है।"

मनुष्य सृष्टिकर्त्ता नहीं हो सकता—इस युग में ऐसे लोगों की कमी नहीं, जो ईश्वर को सृष्टिकर्त्ता नहीं मानते, वे मनुष्यों को ही भगवान् माने बैठे हैं। वे कहते हैं कि सृष्टि अपने आप बन गई, परन्तु जो बनती है वह अवश्य बिगड़ती

है। जड़ वस्तु एक ही काम कर सकती है या बनती ही रहे या बिगड़ती ही रहे। विपरीत गुण होने का मतलब किसी का हस्तक्षेप है, उसे ही ईश्वर कहते हैं, जो निर्माण गति और संहार करता है। एक युवक ने कहा कि जब भगवान् निराकार है तो उसके हाथ पांव हो ही नहीं सकते, परन्तु संसार में सब कार्य हाथ पांव आदि से ही होते हैं, अत: ईश्वर है ही नहीं। मैंने कहा बेटा यदि पांव और हाथ के बिना कोई कार्य नहीं हो सकता तो तुम जब भोजन करते हो तो उसका रस शरीर में बनता है, खून बनता है, हड्डी आदि बनते हैं, बताओ किस हाथ-पांव से काम लिया? कौन-सा बिजली का बटन दबाया? दिन-रात श्वास चलता है, बताओ तुम इसमें क्या करते हो? मनुष्य यदि कुछ कर सकता तो किसी को मरने ही न देता। बेटा हाथ-पांव से शरीर के बाहर के कार्य होते हैं, जैसे बाल्टी को उठाना, कपड़े धोना, चलना आदि-आदि परन्तु शरीर के अन्दर के कार्य 'आत्मा' सब बिना हाथ-पांव के अर्थात् बिना किसी सहायता के कर सकता है। वैसे ही ईश्वर सर्वव्यापक होने से, कोई भी पदार्थ उससे बाहर न होने के कारण सारी सृष्टि का कार्य बिना हाथ-पांव के कर लेता है।

ध्यान कैसे करें—प्राय: लोग प्रश्न किया करते हैं कि जब कोई वस्तु सामने ही नहीं है तो ध्यान कैसे करें? कई लोगों ने ध्यान करने के लिए मूर्तियाँ बनाई, परन्तु मूर्तियों में ध्यान हो ही नहीं सकता, क्योंकि जो पदार्थ सामने होता है, उसका ध्यान नहीं दर्शन होता है। ध्यान उसका ही होता है, जो निराकार है। बच्चे जब पाठ भूल जाते हैं तब अध्यापक कहा करते हैं बेटा! ध्यान करो, क्योंकि शब्द की शक्ल नहीं होती। मूर्तिपूजा करने वालों को भी जब अन्दर से आनन्द आने लगता है, आँखें बन्द कर लेते हैं, क्योंकि ईश्वर का विषय भौतिक नहीं, आध्यात्मिक है। अत: ईश्वर की अनुभूति आत्मा से ही हो सकती है।

ध्यान कहाँ करें—कई लोग ध्यान के स्थान पर पूजा भी करते हैं। परन्तु ध्यान रखें, पूजा माता, पिता, गुरु, अतिथि, गाय आदि की हुआ करती है, क्योंकि पूजा का अर्थ पूजा होती है बाहर से और उपासना होती है अन्दर से। अत: प्रभु का मन्दिर (आत्मा का निवास स्थान) हृदय देश ही है। अत: सर्वभूतानां हृद्देशे अर्जुन निष्ठति। इसलिए ईश्वर का मिलन वहीं होगा, जहाँ आत्मा भी हो। ध्यान का स्थान हृद्देश अर्थात् हृदय में ब्रह्मरन्ध्र तक कहा गया है। अत: ध्यान भी यहीं करें।

ध्यान क्यों करें—क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अच्छा बनना चाहता है, यश चाहता है, जैसी संगत वैसी रंगत। यह एक मौलिक सच्चाई है कि हम यदि फल वाले की ही दुकान पर जाएं तो सुगन्ध से भर जायेंगे। ठीक इसी प्रकार भक्ति से जीवन में सुगन्ध आती है। भगवान् से प्यार करने वाले सबके प्यारे होते हैं। भगवान् की संगत से, उसकी प्रेरणा से, उसकी कृपा से मनुष्य 'पवित्र' होकर गुणों से भर जाता है। 'पवित्रता' जीवन का मूल और भक्ति जीवन का मूल है। अत: ध्यान करें और फूल बनें।

भक्ति पवित्र होकर नित्य करनी चाहिए, क्योंकि भगवान् नित्य और पवित्र है, अत: नित्य का नित्य से ही मिलन हो सकता है। समझने की बात यह है कि आत्मा और परमात्मा में विशेष अन्तर है। आत्मा अल्पज्ञ और परमात्मा सर्वज्ञ है, आत्मा पुरुष और परमात्मा पुरुषोत्तम है, आत्मा ससीम और परमात्मा असीम है। यह गणना नहीं हो सकती। अन्त में यही कहना है कि आत्मा है 'आनन्द' का भिखारी और परमात्मा है आनन्द के भण्डारी। **(आर्य जीवन से साभार)**

दिनांक 5, 6 अक्तूबर 2024 को आर्यसमाज इसराणा (पानीपत) का वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ। पूज्य आचार्य वेदमित्र जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ वेद-उपदेश व श्री सहदेव 'बेधड़क' जी व आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक श्री सत्यपाल 'मधुर' के भजनोपदेश हुए। आर्यसमाज के चौ० लहरीसिंह के पौत्र श्री रामचन्द्र स्वतंत्रता सेनानी, प्रधान मा० सूरतसिंह, कर्मवीर, रामकंवार ठेकेदार, रणजीतसिंह, परमजीत आदि द्वारा सुंदर व्यवस्था रही।

ईश्वर के संबंध में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचार

❑ डॉ. विवेक आर्य

चारों वेदों में ऐसा कहीं नहीं लिखा जिससे अनेक ईश्वर सिद्ध हों। किन्तु यह तो लिखा है कि ईश्वर एक है। देवता दिव्य गुणों के युक्त होने के कारण कहलाते हैं जैसा कि पृथ्वी, परन्तु इसको कहीं ईश्वर तथा उपासनीय नहीं माना है। जिसमें सब देवता स्थित हैं, वह जानने एवं उपासना करने योग्य देवों का देव होने से महादेव इसलिये कहलाता है कि वही सब जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलयकर्ता, न्यायाधीश, अधिष्ठाता है। ईश्वर दयालु एवं न्यायकारी है। न्याय और दया में नाम मात्र ही भेद है, क्योंकि जो न्याय से प्रयोजन सिद्ध होता है वही दया से।

दण्ड देने का प्रयोजन है कि मनुष्य अपराध करने से बंध होकर दु:खों को प्राप्त न हो, वही दया कहलाती है। जिसने जैसा जितना बुरा कर्म किया है उसको उतना है दण्ड देना चाहिये, उसी का नाम न्याय है। जो अपराध का दण्ड न दिया जाय तो न्याय का नाश हो जाय, क्योंकि एक अपराधी को छोड़ देने से सहस्त्रों धर्मात्मा पुरुषों को दु:ख देना है। जब एक को छोड़ने से सहस्त्रों मनुष्यों को दु:ख प्राप्त होता हो तो वह दया किस प्रकार हो सकती है? दया वही है कि अपराधी को कारागार में रखकर पाप करने से बचाना। निरन्तर एवं जघन्य अपराध करने पर मृत्युदण्ड देकर अन्य सहस्त्रों मनुष्यों पर दया प्रकाशित करना।

संसार में तो सच्चा-झूठा दोनों सुनने में आते हैं। किन्तु उसका विचार से निश्चय करना अपना-अपना काम है। ईश्वर की पूर्ण दया तो यह है कि जिसने जीवों के प्रयोजन सिद्ध होने के अर्थ जगत् में सकल पदार्थ उत्पन्न करके दान दे रक्खे हैं। इससे भिन्न दूसरी बड़ी दया कौन-सी है? अब न्याय का फल प्रत्यक्ष दीखता है कि सुख-दु:ख की व्याख्या अधिक और न्यूनता से प्रकाशित कर रही है। इन दोनों का इतना ही भेद है कि जो मन में सबको सुख होने और दुख छूटने की इच्छा और क्रिया करना है वह दया और बाह्य चेष्टा अर्थात् बंधन छेदनादि यथावत् दण्ड देना न्याय कहलाता है। दोनों का एक प्रयोजन यह है कि सबको पाप और दु:ख से पृथक् कर देना।

ईश्वर यदि साकार होता तो व्यापक नहीं हो सकता। जब व्यापक न होता तो सर्वाज्ञादि गुण भी ईश्वर में नहीं घट सकते, क्योंकि परिमित वस्तु में गुण, कर्म, स्वभाव भी परिमित रहते हैं तथा शीतोष्ण, क्षुधा, तृष्णा और रोग, दोष, छेदन, भेदन आदि से रहित नहीं हो सकता। अत: निश्चित है कि ईश्वर निराकार है। जो साकार हो तो उसके नाक, कान, आँख आदि अवयवों को बनाने वाला ईश्वर के अतिरिक्त कोई दूसरा होना चाहिये, क्योंकि जो संयोग से उत्पन्न होता हो उसको संयुक्त करने वाला निराकार चेतन आवश्य होना चाहिये। कोई कहता है कि ईश्वर ने स्वैच्छा से आप ही आप अपना शरीर बना लिया। तो भी यही सिद्ध हुआ कि शरीर बनाने के पूर्व वह निराकार था। इसलिये परमात्मा कभी शरीर धारण नहीं करता, किन्तु निराकार होने से सब जगत को सूक्ष्म कारणों से स्थूलाकार बना देता है।

सर्वशक्तिमान् का अर्थ है कि ईश्वर अपने काम अर्थात उत्पत्ति, पालन, प्रलय आदि और सब जीवों के पाप-पुण्य की यथायोग्य व्यवस्था करने में किंचित् भी किसी की सहायता नहीं लेता अर्थात् अपने अनन्त सामर्थ्य से ही सब अपना काम पूर्ण कर लेता है। इसका अर्थ यह कदापि नहीं है की परमेश्वर वह सब कर सकता है जो उसे नहीं करना चाहिये। जैसे- अपने आपको मारना, अनेक ईश्वर बनाना, स्वयं अविद्वान्, चोरी, व्यभिचारादि पापकर्म कर और दु:खी भी हो सकना। ये काम ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव से विरुद्ध हैं।

ईश्वर आदि भी है और अनादि भी। ईश्वर सबकी भलाई एवं सबके लिये सुख चाहता है परन्तु स्वतंत्रता के साथ किसी को बिना पाप किये पराधीन नहीं करता।

ईश्वर की स्तुति प्रार्थना करने से लाभ-स्तुति से ईश्वर से प्रीति, उसके गुण, कर्म, स्वभाव से अपने गुण, कर्म, स्वभाव को सुधारना। प्रार्थना से निरभयता, उत्साह और सहाय का मिलना। उपासना से परब्रह्म से मेल और साक्षात्कार होना।

ईश्वर के हाथ नहीं किन्तु अपने शक्तिरूपी हाथ से सबका रचन, ग्रहण करता। पग नहीं परन्तु व्यापक होने से सबसे अधिक वेगवान। चक्षु का गोलक नहीं परन्तु सबको

यथावत् देखता। श्रोत नहीं तथाकथित सबकी बातें सुनता। अंत:करण नहीं परन्तु सब जगत् को जानता है और उसको अवधि सहित जानने वाला कोई भी नहीं। उसको सनातन, सबसे श्रेष्ठ, सबमें पूर्ण होने से पुरुष कहते हैं। वह इन्द्रियों और अंत:करण के बिना अपने सब काम अपने सामर्थ्य से करता है।

न कोई उसके तुल्य है और न उससे अधिक। उसमें सर्वोत्तम शक्ति अर्थात् जिसमें अनंत ज्ञान, अनंत बल और अनंत क्रिया है। यदि परमेश्वर निष्क्रिय होता तो जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय न कर सकता। इसलिये वह विभु तथापि चेतन होने से उस क्रिया में भी है।

ईश्वर जितने देश काल में क्रिया करना उचित समझता है उतने ही देशकाल में क्रिया करता है न अधिक न न्यून क्योंकि वह विद्वान् है।

परमात्मा पूर्ण ज्ञानी है, पूर्ण ज्ञान उसे कहते हैं जो पदार्थ जिस प्रकार का हो उसे उसी रूप में जानना।

परमेश्वर अनंत है। तो उसको अनंत ही जानना ज्ञान, उसके विरुद्ध अज्ञान अर्थात् अनंत को सांत और सांत को अनंत जानना भ्रम कहलाता है। यथार्थ दर्शन ज्ञानमिति, जिसका जैसा गुण, कर्म, स्वभाव हो उस पदार्थ को वैसा जानकर मानना ही ज्ञान और विज्ञान कहलाता है और उससे उल्टा अज्ञान।

ईश्वर जन्म नहीं लेता, यजुर्वेद में लिखा है—

'अज एकपात्' सपथर्यगाच्छुक्रमकायम०।

यह बात वेद विरुद्ध प्रमाणित नहीं होती। ऐसा हो सकता है कि श्रीकृष्ण धर्मात्मा धर्म की रक्षा करना चाहते थे कि मैं युग-युग में जन्म लेके श्रेष्ठों की रक्षा और दुष्टों का नाश करूँ तो कुछ दोष नहीं, क्योंकि **'परोपकाराय सतां विभूतय:'** परोपकार के लिये सत्पुरुषों का तन, मन, धन होता है, किन्तु इससे श्रीकृष्ण ईश्वर नहीं हो सकते।

वेदार्थ को न जानने, सम्प्रदायी लोंगो के बहकावे और अपने आप अविद्वान् होने से भ्रमजाल में फँस के ऐसी-ऐसी अप्रमाणिक बातें करते और मानते हैं।

जो ईश्वर अवतार शरीर धारण किये बिना जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय करता है उसके लिये कंस और रावणादि एक कीड़ी के समान भी नहीं हैं। वह सर्वव्यापक होने से कंस रावणादि के शरीर में भी परिपूर्ण हो रहा है। जब चाहे उसी समय मर्मच्छेदन कर नाश कर सकता है। भला वह अनंत गुण, कर्म स्वभावयुक्त परमात्मा को एक शूद्र जीव को मारने के लिये जन्म-मरण युक्त कहने वाले को मूर्खपन से अन्य कुछ विशेष उपमा मिल सकती है और जो कोई कहे कि भक्तजन के उद्धार करने के लिये जन्म लेता है तो भी सत्य नहीं है। क्योंकि जो भक्तजन ईश्वर की आज्ञानुकूल चलते हैं उसके उद्धार करने का पूरा सामर्थ्य ईश्वर में है। क्या ईश्वर पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रादि जगत् के बनाने से कंस रावाणादि का वध और गोवर्धनादि का उठाना बड़े कार्य हैं।

जो कोई इस सृष्टि में परमेश्वर के कर्मों का विचार करे तो **'न भूतो न भविष्यति'** ईश्वर के सदृश्य न कोई है न होगा। इस युक्ति से भी ईश्वर का जन्म सिद्ध नहीं होता। जैसे कोई अनंत आकाश को कहे कि गर्भ में आया और मुठ्ठी में भर लिया, ऐसा कहना कभी सच नहीं हो सकता, क्योंकि आकाश अनंत और सब में व्यापक है, इससे न आकाश बाहर आता और न भीतर जाता, वैसे ही अनंत सर्वव्यापक परमात्मा के होने से उसका आना-जाना कभी सिद्ध नहीं हो सकता। आना और जाना वहाँ हो सकता है जहाँ न हो। क्या परमेशवर गर्भ में व्यापक नहीं था जो कहीं से आया और बाहर नहीं था जो भीतर से निकला। ऐसा ईश्वर के विषय में कहना और मानना विद्याहीनों के सिवाय कौन कह और मान सकेगा। इसलिये परमेश्वर का आना-जाना और जन्म-मरण कभी सिद्ध नहीं हो सकता। इसलिये ईसा आदि को ईश्वर का अवतार नहीं समझना चाहिये। वे राग, द्वेष, क्षुधा, तृष्णा, भय, शोक, दु:ख, सुख, जन्म, मरण आदि गुणायुक्त होने से मनुष्य थे।

ईश्वर पाप क्षमा नहीं कर सकता। ऐसा करने से उसका न्याय नष्ट हो जाता है और मनुष्य क्षमा दान मिलने की आशा से महापापी बन सकता है तथा वह निर्भय एवं उत्साह पूर्वक पाप कर्म करने में संलग्न हो जायेगा। जिस प्रकार अपराधी को यह भरोसा हो जाय कि कानून के द्वारा उसके अपराध करने पर कोई सजा नहीं मिल सकती तो वह निर्भयपूर्वक अपराध करता है। सभी प्रणियों को कर्मानुसार फल देना ईश्वर का कार्य है, क्षमा करना नहीं। मनुष्य अपने कर्मों में स्वतंत्र एवं ईश्वर की व्यवस्था में परतंत्र है।

मजदूर ने पहाड़ से लोहा निकाला, दुकानदार ने खरीदा,

लौहार ने तलवार बनाई, सिपाही ने तलवार ली, उसने किसी को मार दिया। अब अपराधी लोहे का निकालने वाला मजदूर, खरीदने वाला दुकानदार और बनाने वाला लौहार नहीं होगा। बल्कि केवल वह सिपाही होगा जिसने किसी की हत्या की। इसलिये शरीर आदि की उत्पत्ति करने वाला ईश्वर व्यक्ति के कार्यों का भोक्ता नहीं होगा, क्योंकि कर्म करने वाला परमेश्वर नहीं होता। यदि ऐसा होता तो क्या किसी को पाप करने की प्रेरणा देता। अत: मनुष्य कार्य करने के लिये स्वतंत्र है। उसी तरह ईश्वर भी कर्मानुसार फल देने के लिये स्वतंत्र है।

जीव और ईश्वर दोनों चेतन स्वरूप हैं। स्वभाव दोनों का पवित्र, अविनाशी एवं धार्मिकता आदि है। परन्तु परमेश्वर के सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय, सबको नियम में रखना, जीवों का पाप पुण्य के फल देना आदि धर्मयुक्त कार्य हैं और जीव में पदार्थों को पाने की अभिलाषा (इच्छा), द्वेष-दुखादि की अनिच्छा, बैर, (प्रयत्न) पुरुषार्थ, बल, (सुख) आनन्द, (दु:ख) विलाप, अप्रसन्नता, (ज्ञान) विवेक पहचानना ये तुल्य हैं। किन्तु वैशेषिक में प्राणवायु को बाहर निकालना, फिर उसे बाहर से भीतर लेना, (निमेष) आँख को मींचना, (उन्मेष) आँखों को खोलना, (जीवन) प्राण धारण करना, (मनन) निश्चय स्मरण अहंकार करना, (गति) चलना, (इन्दिय) सब इन्दियों को चलाना, (अंतर्विकार) भिन्न-भिन्न सुधा, तृष्णा, हर्ष, शोकादि युक्त होना, ये जीवात्मा के गुण परमात्मा से भिन्न हैं।

ईश्वर को त्रिकालदर्शी कहना मूर्खता के अतिरिक्त और कुछ नहीं, क्योंकि जो ईश्वर होकर न रहे वह भविष्यकाल कहलाता है। क्या ईश्वर को कोई ज्ञान रहके नहीं रहता? तथा न होके होता है? इसलिये परमात्मा का ज्ञान एकरस अखण्डित वर्तमान रहता है। भूत, भविष्यत् जीवों के लिये है। जीवों के कर्म की अपेक्षा से त्रिकालज्ञाता ईश्वर में है, स्वत: नहीं। जैसा स्वतंत्रता से जीव करता है, वैसा ही सर्वज्ञता से ईश्वर जानता है और जैसा ईश्वर जानता है वैसा जीव करता है अर्थात् भूत, भविष्य, वर्तमान के ज्ञान और फल देने में ईश्वर स्वतंत्र और जीव किंचित् वर्तमान और कर्म करने में स्वतंत्र है। ईश्वर का अनादि ज्ञान होने से जैसा कर्म का ज्ञान है वैसा ही दण्ड देने का भी ज्ञान अनादि है। दोनों ज्ञान उसके सत्य हैं। क्या कर्म ज्ञान सच्चा और दण्ड ज्ञान मिथ्या कभी हो सकता है। इसलिये इसमें कोई भी दोष नहीं आता।

परमेश्वर सगुण एवं निर्गुण दोनों है। गुणों से सहित सगुण, गुणों से रहित निर्गुण। अपने-अपने स्वाभाविक गुणों से सहित और दूसरे विरोधी के गुणों से रहित होने से सब पदार्थ सगुण और निर्गुण हैं। कोई भी ऐसा पदार्थ नहीं है जिसमें केवल निर्गुणता या केवल सगुणता हो। किन्तु एक ही में निर्गुणता एवं सगुणता सदा रहती है। वैसे ही परमेश्वर अपने अनंत ज्ञान बलादि गुणों से सहित होने से सगुण रूपादि जड़ के तथा द्वेषादि के गुणों से पृथक् होने से निर्गुण कहलाता है। यह कहना अज्ञानता है कि निराकार निर्गुण और साकार सगुण है।

परमेश्वर न रागी है, न विरक्त। राग अपने से भिन्न पृथक् पदार्थों में होता है, सो परमेश्वर से कोई पदार्थ पृथक् तथा उत्तम नहीं है, अत: उसमें राग का होना संभव नहीं है। और जो प्राप्त को छोड़ देवे उसको विरक्त कहते हैं। ईश्वर व्यापक होने से किसी पदार्थ को छोड़ ही नहीं सकता। इसलिये विरक्त भी नहीं है। ईश्वर में प्राणियों की तरह की इच्छा नहीं होती। जो स्वयंभू, सर्वव्यापक, शुद्ध, सनातन, निराकार परमेश्वर है वह सनातन जीवरूपी प्रजा के कल्याणार्थ यथावत् रीतिपूर्वक वेद द्वारा सब विद्याओं का उपदेश करता है।

परमेश्वर के सर्वशक्तिमान् और सर्वव्यापक होने से जीव को अपनी व्याप्ति से वेदविद्या के उपदेश करने में कुछ भी मुखादि की अपेक्षा नहीं है, क्योंकि मुख जिव्हा से वर्णोच्चारण अपने से भिन्न को बोध होने के लिये किया जाता है, कुछ अपने लिये नहीं, क्योंकि मुख जिव्हा के व्यवहार करे बिना ही मन के अनेक व्यवहारों का विचार और शब्दोच्चारण होता रहता है। कानों का उँगुलियों से मूँदकर देखो, सुनो कि बिना मुख जिव्हा तालवादि स्थानों के कैसे-कैसे शब्द हो रहे हैं?

जब परमात्मा निराकार, सर्वव्यापक है तो अपनी अखिल वेद विद्या का उपदेश जीवस्थ स्वरूप से जीवात्मा में प्रकाशित कर देता है। फिर वह मनुष्य अपने मुख से उच्चारण करके दूसरे को सुनाता है। इसे ही वेद ज्ञान कहते हैं जो समस्त प्राणियों के कल्याण के लिए ईश्वर द्वारा दिया गया है।

(फेसबुक से साभार)

हम क्यों हारे? दास्तान-ए-गद्दारी (11)

❑ राजेश आर्य, गांव आट्टा, जिला पानीपत मो० 9991291318

प्रिय पाठकवृन्द! हमारे इतिहास का यह कटु सत्य है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद जो हमारे शीर्ष नेता बने, उनमें से बहुत से क्रान्तिवीरों का विरोध कर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजों की सहायता करते रहे और दिग्भ्रमित हुई अनपढ़ जनता जन्मभूमि के मतवाले वीरों को अपना दुश्मन मानती रही। कई बार तो जनता ने ही इन्हें मारने में अंग्रेजों का साथ दिया। फिर भी वे इसे (भारत की जनता को) भारतमाता मानकर इसकी मुक्ति के लिए अपने प्राणों की आहुति देते रहे।

इन मतवालों के पास देशप्रेम व बलिदान भावना से भरा मन व तन तो था, पर आजादी की लड़ाई बिना हथियारों के नहीं लड़ी जाती और हथियार बिना धन कैसे मिलते, धन इनके पास था ही नहीं। अत: लाचार होकर इन्हें कई बार डाकुओं जैसा कार्य भी करना पड़ता था, जिसके अन्तर्गत सरकारी खजाने व अंग्रेजों के सहयोगी लूटे गये। पर यह सत्य है कि किसी को लूटकर मौज-मस्ती करना इनका उद्देश्य नहीं था।

26 अगस्त 1907 के दिन क्रान्तिकारियों की पेशी पर आई दर्शकों की भीड़ पर मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड के आदेश से डंडे बरसाते एक अंग्रेज सार्जेण्ट का 15-16 वर्ष के किशोर सुशील कुमार सेन ने डण्डा पकड़ लिया और उसे लात-घूसों से पीट दिया। मजिस्ट्रेट ने सुशील कुमार को 15 बेंत की सजा दी। यहीं से वह पक्का क्रान्तिकारी बन गया और अरविन्द घोष की अनुशीलन समिति की सदस्यता ग्रहण कर ली।

28 अप्रैल 1915 को सुशील कुमार ने अपने दल के साथ नदिया जिले में प्रागपुर की पुलिस चौकी पर धावा बोला और वहाँ से कुछ हथियार छीनकर नावों में बैठ भागे। पुलिस ने इनक पीछा किया और सब ओर खबर फैला दी कि कुछ डकैत डाका डालकर फरार हो गये हैं। सभी उन्हें पकड़न मं पुलिस की सहायता करें। बहुत से लोग इकट्ठे हो गए। सुशील और उसके साथी किसी गाँव से बाहर उजड़ी हुई गोशाला में खाना बना रहे थे। किसी ग्रामीण ने उन्हें देख लिया और गाँव जाकर पुलिस को वहाँ बुला लाया। आमना-सामना होते ही गोलियाँ चलने लगीं। एक गोली सुशील के पेट में लगी, जिससे वह गिर पड़ा। क्रान्तिकारियों ने जैसे-तैसे उन्हें एक नाव में डाला और तेजी से नाव खेने लगे। होश आने पर सुशील ने साथियों से कहा—"मैं बचूँगा नहीं, तुम मेरी चिन्ता छोड़कर भाग जाओ।" साथी सहमत नहीं हुए, तब नेता ने दृढ़ता से कहा—"मेरा सिर धड़ से अलग करके साथ ले जाओ। केवल धड़ से वे कुछ पहचान न सकेंगे।"

साथियों ने इस नृशंस कार्य को करने की हिम्मत न देख सुशील सेन ने दृढ़ता से आदेश दिया। साथियों ने बड़ी अनिच्छा से इस क्रूर धर्म का पालन किया। उन्होंने सिर काट पत्थर से बांध नदी में डुबा दिया। पुलिस को नाव में केवल धड़ ही मिला, जिसकी कोई पहचान न हो सकी।

किशोर अवस्था में अपनी खुखरी से खूंखार बाघ को मारकर बंगाली वीर यतीन्द्रनाथ मुखर्जी बाघा जतीन के नाम से प्रसिद्ध हुआ। अपने स्वाभिमानी व निडर स्वभाव के कारण सरकारी नौकरी होते हुए भी उद्दण्ड अंग्रेज अफसरों को पीटकर यह वीर क्रान्ति पथ पर चल पड़ा। पहले 'अनुशीलन समिति' के सम्पर्क में आया, फिर अलग से 'बान्धव समिति' दल खड़ा कर दिया। कलकत्ता में क्रान्तिकारियों को पकड़वाने व यातना देने वाले गुप्तचर विभाग के उप-अधीक्षक शम्सुल हक को यतीन्द्र नाथ के दल ने 24 जनवरी 1910 को मौत के घाट उतार दिया। यतीन्द्रनाथ को गिरफ्तार कर लिया, पर गवाह के अभाव में छोड़ दिया गया। साथ ही नौकरी से भी हटा दिया गया। अब उनके सामने क्रान्ति का पथ प्रशस्त था। रासबिहारी बोस के सम्पर्क में आए और शस्त्र व धन के लिए राजनीतिक डाके डालना तय किया।

कोलकाता की 'रोडा एण्ड कम्पनी' के हथियारों की एक बैलगाड़ी क्रान्तिकारियों ने हथिया ली, जिसमें 50 माउजर पिस्तौलें और 40,000 कारतूस उनके हाथ लगे। यह बहुत बड़ी सफलता थी। तीन डकैतियों में उन्हें काफी धनराशि भी प्राप्त हो गई। 24 फरवरी 1915 को बेलियाघाट की डकैती हुए अभी दो दिन ही हुए थे कि कोलकाता के एक मकान में अपने साथियों के साथ पिस्तौलें साफ करते हुए उन्हें एक व्यक्ति ने, जिस पर ये लोग शक करते थे,

पहचान लिया। उसका जीवित वापस लौट जाना क्रान्तिदल के लिए विनाशकारी होता, अत: यतीन्द्रनाथ के आदेश से चित्तप्रिय ने उसे गोली मार दी और भाग लिये। नीरद हवलदार ने मरते समय यतीन्द्रनाथ को ही अपनी हत्या का अपराधी बताया।

साथियों ने यतीन्द्रनाथ को विदेश जाने की सलह दी, पर उन्होंने कहा—''जिनके साथ जीवन-मरण में साथ देने की शपथ लेकर हमने घर छोड़ा है, उन साथियों को विपत्ति के मुँह में छोडकरविदेश जाने की बात मैं सोच भी नहीं सकता। यदि मैं देश के शत्रुओं से लड़ते-लड़ते मारा जाऊँ तो उससे अच्छा तो और कुछ हो ही नहीं सकता था।''

बाघा जतीन को पकड़ने के लिए अब पुलिस बालासोर में उनके ठिकाने पर पहुँची, पर वे चकमा देकर निकल गए। गाँव के लोगों को पुलिस ने समझा दिया कि एक भयंकर डकैतों का दल उनके इलाके में छिपा हुआ है, उन्हें पकड़ने अथवा पकड़वा देने पर खूब इनाम दिया जाएगा।

पिछले दो दिन से बाघा जतीन को खाना व सोना कुछ भी नसीब नहीं हुआ था। दिन दोपहर की धूप में उन्हें ग्राम, नदी-नाले पार करके चलना पड़ रहा था। राह में नदी पार होते समय प्राण-रक्षा के लिए माझी से थोड़ा-सा भात मांगा, पर जाति की रूढ़िता में बँधा होने के कारण वह देने को तैयार नहीं हुआ। पुलिस पीछे पड़ी हुई थी। अपने चार साथियों के साथ जतीन बालेश्वर के निकट एक जंगल में चले गये। गाँव वालों के साथ पुलिस ने इन्हें घेर लिया।

शचीन्द्रनाथ सान्याल ने लिखा है—''एक ओर प्राय: हजार से अधिक गाँव वाले, डाकू पकड़े जा रहे हैं, यह समझकर, हथियारबन्द पुलिस का साथा दे रहे थे, दूसरी ओर थे केवल पांच विप्लवी। ....किन्तु घायल होने पर भी उन्होंने हथियार नहीं रखे। इतने में एक घातक गोली आकर चित्तप्रिय को अमरधाम ले गई। ...अन्त में उन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया।''

यतीन्द्रनाथ का शरीर बहुत खून गिरने से अवसन्न होकर गिर पड़ा। उन्होंने अगले दिन कटक के अस्पताल में प्राण त्याग दिये। मनोरंजन और नीरेन्द्र को फांसी हुई। ज्योतिष को आजन्म काले पानी की सजा मिली। वहाँ ये पागल हो गये। बाद में इन्हें बहरामपुर के पागलखाने में रखा गया और वहीं से स्वर्गवासी हो गये।

देव दयानन्द के गुण गाओ

हे आर्य कुमारो! अब तो जाओ जाग।
देव दयानन्द के गुण गाओ, कलह फूट दो त्याग॥ टेक॥

जगत्गुरु ऋषि दयानन्द जी, ईश्वर भक्त निराले थे।
योगी, तपधारी, ब्रह्मचारी, देशभक्त मतवाले थे।
वेदभक्त, गोभक्त, साहसी, त्यागी, परोपकारी थे।
मानवता के पुंज संत थे, महावीर बलधारी थे।
वेद विरोधी लगा सके ना, अब तक उन पर दाग।
हे आर्य कुमारो! अब तो जाओ जाग॥ 1॥

अंग्रेजों का राज्य यहाँ था, पाप विधर्मी करते थे।
गऊओं की हत्या करते थे, ईश्वर से ना डरते थे।
देशभक्त भारतवासी, दिन-रात सताये जाते थे।
राम-कृष्ण के वंशज तब, फांसी चढ़वाये जाते थे।
जुल्म देख दुष्टों के, ऋषि के दिल में भड़की आग।
हे आर्य कुमारो! अब तो जाओ जाग॥ 2॥

दुर्गति देख देश भारत की, जोश सन्त को आया था।
अंग्रेजों भारत से भागो, ऋषिवर ने फरमाया था।
वेदों का संदेश देश की, जनता को समझाया था।
जाति-पाति है वेद विरोधी, सुख क मार्ग बताया था।
साफ कहा था यवन, ईसाई, हैं सब काले नाग।
हे आर्य कुमारो! अब तो जाओ जाग॥ 3॥

श्रद्धानन्द, लाजपत, बिस्मिल, ऋषि के सच्चे चेले थे।
लेखराम अरु राजपाल, श्रोणित की होली खेले थे।
मदनलाल, करतार, भगतसिंह, भारत के दीवाने थे।
पण्डित बालमुकुन्द, चन्द्रशेखर, योद्धा मस्ताने थे।
इन वीरों ने आजदी का, गाया प्यारा राग।
हे आर्य कुमारो! अब तो जाओ जाग॥ 4॥

वीरों के बलिदानों से ही, मिली हमें यह आजादी।
धूर्त-स्वार्थी नेत बनकर, आज रहे कर बर्बादी।
वेद विरोधी पाखण्डी, पाखण्ड रात-दिन बढ़ा रहे।
भूल गए ईश्वर को ढोंगी, मुंडों को सिर चढ़ा रहे।
आस्तीन में छिपकर बैठे, विषधर काले नाग।
हे आर्य कुमारो! अब तो जाओ जाग॥ 5॥

वीरों की कुर्बानी को अब, देश-द्रोही भूल गए।
सुरा-सुन्दरी के दीवाने, दौलत पाकर फूल गए।
उठो आर्यो! अंगड़ाई लो, अपना जोश दिखाओ तुम।
देशभक्त बलवान बनो अब, मिटता देश बचाओ तुम।
'नन्दलाल' कह तुम्हें देख, पापी जायेंगे भाग।
हे आर्य कुमारो! अब तो जाओ जाग॥ 5॥

—पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक, आर्यसदन बहीन, जनपद पलवल (हरयाणा) मो० 9813845774

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी युग परिवर्तन के सम्पूर्ण वैचारिक क्रान्ति के प्रथम सर्जनहार थे

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महान् धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक क्रान्ति के प्रथम विवेकशील, प्रगतिशील विचारों के प्रणेता याद किये जाते हैं। देश में बढ़ते हुए तमाम आडम्बरों, रूढ़ियों तथा कुरीतियों को दूर करने और उनके स्थान पर विवेकशील प्रगतीशील धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक तत्त्वों को पुनः जागरित करने का क्रान्तिकारी कार्य किया। उन्होंने अपनी वाणी तथा लेखन शक्ति से ही लाखों-लाखों जनों में विवेकशील विचारों को भर दिया। उनकी प्रचलन शैली ने भारतीयों की आत्मा को झकझोर दिया। महर्षि दयानन्द जी निर्भीक वक्ता थे, वैसा शायद ही कोई हुआ हो। उनकी तर्क शक्तियां और ओजस्वी शब्द समाज के मिथ्या आडम्बरों को चकनाचूर बना डालते थे। जीवन विषयों पर स्वामी जी उतनी ही शान्त और गम्भीर भाषा से श्रोताओं पर अपने गहन विद्वत्ता की विशिष्टता की छाप डाल देते थे।

सत्य के सर्मथन में महर्षि दयानन्द जी ने कभी भी पक्षपात नहीं किया और असत्य व आडम्बरों के खिलाफ बोलने में नहीं चूकते थे। जिनके यहाँ आमन्त्रित होते थे, उनके यहां ही कुरीतियों का खण्डन कर देते थे। इसका अर्थ यह नहीं है कि वह शिष्टाचार को भूल जाते थे तथा उनके प्रवचन भी उतने ही सरस, गम्भीर और मधुर भी उतने ही होते थे। महर्षि दयानन्द जी की प्रवचन शैली बहुमुखी थी। उनकी समालोचनाएं बड़ी निरपेक्ष थी, उनकी वाणी से प्रभावशाली शक्ति प्रवाहित होती रहती थी। उन्होंने वेदों और वैदिक धर्म की तरफ समाज को लौटाया। महर्षि जी के गुणों से उनका आत्मतेज उनके नेत्रों से प्रकाशित होता था, जो व्यक्ति में प्राणशक्ति प्रवाहित करती थी, जो श्रोताओं को पराभूत करने की असाधारण क्षमता रखता था।

यह प्राण शक्ति वक्ता में एक विशेष प्रकार का चुम्बकरण पैदा करती थी, उनके सामने श्रोताओं का मस्तिष्क श्रद्धा से झुक जाता था। धार्मिक विकास शैली के विकास के लिए इस प्रकार के महापुरुषों का प्रवचन का अध्ययन लाभदायक होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की सबसे बड़ी प्रेरणा थी वह जीवन की सर्वश्रेष्ठ विभूति जो थी, वह थी विवेकशील आर्षज्ञान था। विवेक ज्ञान के आधार पर ही धर्म का, कर्त्तव्य का शुभ-अशुभ का उचित-अनुचित का विवेक होता है और पाप प्रलोभनों के आकर्षणों के पार देख सकना सम्भव होता है। अज्ञानी व्यक्ति यह सब जान नहीं पाते। इन्द्रियों की वासना और प्रलोभनों के पार देख सकना उसके लिए के पार देख सकना उसके लिए असम्भव होता है। इस दुर्दशा से बचाव तभी हो सकता है जब ज्ञान दीपक का प्रकाश हो रहा है, और विवेक के नेत्र खुले हुए हैं।

महर्षि का कथन था भौतिक जीवन की सफलता और आत्मिक जीवन की पूर्णता के लिए सबसे प्रथम सोपान ज्ञान की प्राप्ति है। स्वध्याय सत्संग चिन्तन, मनन, के आधार पर जीवन की समस्याओं को खोजना सम्भव होता है। इसलिए महर्षि जी ने जोर दिया कि मनुष्यों को विवेकशील ज्ञानवान बनना चाहिए। भारतीय ऋषि-मुनियों ने यह तथ्य समझा तथा साधना को सदैव सर्वोपरि महत्त्व दिया। बौधिक आधारशिला पर ज्ञान का सर्वांगीण विकास और उसका शोध हमारी एक विशेषता रही है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का सर्वश्रेष्ठ गुण था सदैव निडर होकर सत्य कहना-ऋषि दयानन्द सरस्वती जी जब देश के रणांगन में उतरे तब उन्हें चारों तरफ ललकार ही ललकार सुनाई दी, चारों तरफचैलेंज ही चैलेंज नजर आया। सबसे बड़ा चैलेंज था विदेशी राज्य का। उनके अन्दर ललकार उठी क्या विदेशी राज्य को वरदास्त करोगे। उनकी आत्मा ने जवाब दिया विदेशी राज्य को बरदास्त नहीं करूंगा। उन्होंने राजस्थानी राजाओं को अंग्रेजी शासन के प्रति विद्रोह करने के लिए तैयार करना शुरू किया। उनका जीवन का सबसे बड़ा भाग राजस्थान के राजाओं को संगठित करने में बीता।

एक उदाहरण-1853 में इस देश के गर्वनर जनरल नार्थबुक थे कलकत्ता के लार्ड विषय ने लार्ड नोर्थबुक थे

कलकत्ता के लार्ड विषय ने लार्ड नोथबुक तथा महर्षि दयानन्द में एक भेंट का आयोजन किया। इस भेंट में दोनों की बातचीत हुई उस भेंट का विवरण जनरल नोर्थबुक ने अपनी डायरी में लिखा। यह डायरी लन्दन में इण्डिया हाउस में आज भी सुरक्षित है। लार्ड नोर्थबुक ने कहा पंडित दयानन्द आप मत मतान्तरों का खण्डन करते हो। हिन्दुओं, ईसाइयों, मुसलमानों के धर्म की आलोचना करते हैं। क्या इस सरकार से अपने लिए कोई सुरक्षा नहीं चाहते हैं।

महर्षि दयानन्द जी ने उत्तर दिया अंग्रेजी राज्य में सबको अपने विचार व्यक्त करने की पूर्ण स्वतन्त्रता है, इसलिए मुझे किसी से किसी प्रकार का खतरा नहीं है। इस पर खुश होकर जनरल ने कहा अगर ऐसी बात है तो आप अपने व्याख्यानों में अंग्रेजी राज्य के उपकारों का वर्णन कर दीजिये और अपने व्याख्यानों के आरम्भ में आप ईश्वर प्रार्थना किया करते हैं। उसके देश पर अंग्रेजी शासन की भी प्रार्थना कर दिया कीजिए।

यह सुनकर ऋषि दयानन्द जी ने उत्तर दिया श्रीमान् जी वह कैसे हो सकता है। मैं तो सायं प्रात: ईश्वर से यह प्रार्थना किया करता हूँ कि इस देश को विदेशियों की दासता से शीघ्र मुक्त कर दीजिये।

लार्ड नार्थबुक ने इस घटना का उल्लेख अपनी उस साप्ताहिक डायरी में किया जो वे भारत से प्रति सप्ताह महारानी विक्टोरिया को भेजा करते थे और इस घटना का उल्लेख करते हुए वह लिखते हैं कि मैंने इस बागी फकीर पर कड़ी निगरानी के लिए गुप्तचर नियुक्त कर दिये हैं।

महर्षि दयानन्द के सम्मुख देश की परतन्त्रता एक अनेक चुनौतियां खड़ी थी-समाज एक जीता-जागता चैलेंज है चारों तरफ ललकार ही ललकार है। हम समाज के चैलेंज को देखते हुए भी नहीं देखते। शरीर में पीड़ा हो उसे भी अनुभव न करें वह जीवित नहीं मृत है। महर्षि ने समाज की पीड़ा को अनुभव किया, उन्हें तो अपने समय का सारा समाज चैलेंज के रूप में दिखा। हिन्दुओं की रूढ़िवाद एक महान चैलेंज था। जहां देखो दासता की गुलामी, रूढ़ियों की गुलामी, पौराणिकों की रूढ़िवादिता, ईसाई व इस्लाम की गुलामी से हिन्दुओं को कमजोर कर रही थी। महर्षि को अपनों से और बाहर वालों से भी जूझना पड़ा। दुनिया भर के रूढ़िवाद से टक्कर लेने के लिए उठ खड़े हुए थे।

उन्नीसवीं शताब्दी में भारत में जिन विभूतियों ने जन्म लिया उन में से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी प्रमुख सुधारवादी थे। महर्षि आये तो जमाने का दास बनकर नहीं आए समय को अपना दास बनाने आए थे। यही कारण है महर्षि ने समाज की आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक रूढ़ियों व अन्धविश्वासों पर सर्वप्रथम एक सत्य कार्य किया। संसार में एक हलचल मच गई। इसीलिए जमाना महर्षि को भारत का पितामह व सच्चा मार्गदर्शक समझता है।

—पण्डित उम्मेद सिंह विशारद, वैदिक प्रचारक, गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड)
मो० 9411512019, 9557641800

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा 200 विद्यार्थियों को 74 लाख से अधिक धनराशि आर्य प्रगति छात्रवृत्ति के रूप में समारोह पूर्वक वितरित

आर्यसमाज हमेशा से शिक्षासेवा का अखंड यज्ञ पूरी निष्ठा से संचालित करता आ रहा है जिसमें गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, आर्य विद्यालय, बलवाड़ी, छात्रावास, अनाथालय और डीएवी जैसी व्यापक संस्थाएं मानव निर्माण के कार्य को लगातार आगे बढ़ा रही हैं।

इस क्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका, आर्यसमाज ह्यूस्टन एवं अन्य दानदाताओं के सहयोग से पिछले तीन वर्षों से लगातार आर्य प्रगति छात्रवृत्ति वितरण करके युवाओं को उनके उज्ज्वल भविष्य और सर्वांगीण विकास के लिए सहयोग राशि प्रदान की जा रही है।

शिक्षा सेवा के इस बृहद् क्रम में 17 नवंबर 2024 को आर्यसमाज डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली में आर्य प्रगति छात्रवृत्ति वितरण समारोह संपन्न हुआ जिसमें पूरे भारत से चयन प्रक्रिया के तहत लगभग 200 विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान कर उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई। इस अवसर पर यज्ञ से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ, जिसमें श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी, श्री भूषण वर्मा जी, ह्यूस्टन अमेरिका ने आहुति देकर विश्वकल्याण की कामना की। इस प्रेरक कार्यक्रम के श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी अध्यक्ष और दिल्ली बीजेपी के अध्यक्ष, श्री वीरेंद्र सचदेवा जी मुख्य अतिथि रहे। विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी ने अपने संदेश में कहा कि संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, इसी भावना को आर्यसमाज लगातार साकार कर रहा है। श्री भूषण वर्मा जी ने अपने संदेश में विद्यार्थियों को कहा कि परिश्रम और पुरुषार्थ सफलता की सबसे बड़ी कुंजी है, इसलिए हमेशा परिश्रम करते रहें। श्री धर्मपाल आर्य जी ने अपने संदेश में कहा कि सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझाना हमारा परम कर्तव्य है और हम इस भावना को सुनिश्चित कर रहे हैं। श्री विनय आर्य जी ने सभी मेधावी छात्रों को शुभकामनाएं देते हुए यह संकल्प दिलाया कि आगे इस योजना का विस्तार करने के लिए जब आप सफल हो जाओ तो दूसरे विद्यार्थियों की भी सहायता करना अत्यंत आवश्यक है। कार्यक्रम में सभा के कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल जी, आर्य केंद्रीय सभा के प्रधान, श्री सुरेंद्र रैली जी, महामंत्री श्री सतीश चड्ढा जी, कोषाध्यक्ष श्री मनीष भाटिया जी, श्री अजय सहगल जी, श्री अजय चौहान जी, श्री आनंद चौहान जी, श्री जोगेंद्र खट्टर जी, श्री वीरेंद्र सरदाना जी, श्री रवि गुप्ता जी और अनेक अन्य महानुभावों ने विद्यार्थियों को शुभकामनाएं औरआशीर्वचनप्रदान किए। इस अवसर पर दिल्ली सभा के उपप्रधान, मंत्री और कार्यकर्ताओं सहित अनेक अन्य महानुभावों ने सभी विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति के साथ ही महर्षि दयानंद सरस्वती जी की जीवनी और साहित्य प्रदान किया। सभी विद्यार्थियों को आर्यसमाज के सेवाकार्यों और महर्षि दयानंद सरस्वती जी की जीवनी का वीडियो भी दिखाया गया। इस अवसर पर उपस्थित सभी आर्यजनों ने विद्यार्थियों को आशीर्वाद और शुभकामनाएं प्रदान की और सभी विद्यार्थी अत्यंत प्रसन्न और आशान्वित थे।

—विनय आर्य, मन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन की ऐतिहासिक पहल कर भारत में एक स्वर्णिम युग की शुरुआत की है—श्री आचार्य देवव्रत जी

- नई दिल्ली में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र भाई मोदी से भेंट कर प्राकृतिक कृषि को मिशन मोड़ में पूरे देश में लागू करने के लिए अंत:करणपूर्वक धन्यवाद दिया
- राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन को केंद्रीय कैबिनेट की मंजूरी 2481 करोड़ का परिव्यय इसमें 1584 करोड़ भारत सरकार द्वारा और 897 करोड़ राज्यों द्वारा खर्च किए जाएंगे।

भारत के किसानों, भारत की भूमि, भारत के पर्यावरण और भारत के नागरिकों के स्वास्थ्य कल्याण के लिए भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन की ऐतिहासिक पहल कर भारत में एक स्वर्णिम युग की शुरुआत की है। गुजरात के राज्यपालश्री आचार्य देवव्रतजी ने आज नई दिल्ली में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र भाई मोदी से भेंट कर प्राकृतिक कृषि को मिशन मोड़ में पूरे देश में लागू करने के लिए उनको अंत:करणपूर्वक धन्यवाद दिया।

राज्यपालश्री आचार्य देवव्रत जी ने कहा कि यह ऐतिहासिक कदम हमारे किसानों और कृषि क्षेत्र के लिए एक नई दिशा तय करेगा। उन्होंने इस महत्त्वपूर्ण निर्णय के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए उन्हें धन्यवाद दिया, जिनके दूरदर्शी नेतृत्व में यह योजना संभव हो सकी है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में हुई केंद्रीय कैबिनेट बैठक में कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन (NMNF) को एक स्वतंत्र केंद्र प्रायोजित योजना के रूप में मंजूरी दी गई। यह योजना प्राकृतिक खेती को मिशन मोड़ में बढ़ावा देने के लिए तैयार की गई है।

इस महत्त्वपूर्ण निर्णय के अंतर्गत प्राकृतिक खेती को देशभर में लागू करने के लिए कुल 2481 करोड़ का परिव्यय रखा गया है, जिसमें 1584 करोड़ भारत सरकार द्वारा और 897 करोड़ राज्यों द्वारा खर्च किए जाएंगे। 10,000 जैव-इनपुट संसाधन केंद्र स्थापित किए जाएंगे ताकि किसानों को उपयोग के लिए तैयार प्राकृतिक कृषि इनपुट उपलब्ध हो सके। कृषि विज्ञान केंद्रों, कृषि विश्वविद्यालयों और किसानों के खेतों पर नेचुरल फार्मिंग मॉडल प्रदर्शन फार्म विकसित किए जाएंगे। किसानों के उत्पादों को बाजार तक पहुंचाने के लिए एक सरल प्रमाणन प्रणाली और समर्पित सामान्य ब्रांडिंग की व्यवस्था की जाएगी।

मिशन के लाभ दर्शाते हुए राज्यपालश्री आचार्य देवव्रत जी ने कहा कि राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन से सभी के लिए स्वास्थ्यवर्धक और सुरक्षित खाद्य पदार्थ उपलब्ध होंगे। देश के किसानों की खेती की लागत बिल्कुल कम होगी और बाहरी इनपुट पर निर्भरता घटाने में देश को बड़ी मदद मिलेगी। मृदा स्वास्थ्य और जैव विविधता में सुधार होगा। स्वस्थ मृदा पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण और संरक्षण होगा। देश में विविध फसल प्रणाली को प्रोत्साहन मिलेगा जो सतत खेती के लिए किसानों को प्रेरित करेगा।

इस योजना से प्राकृतिक खेती का विस्तार होगा, ग्राम पंचायतों के 15,000 समूहों के माध्यम से 1 करोड़ किसानों तक प्राकृतिक खेती पहुंचेगी और देश के 7.5 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में प्राकृतिक खेती का क्रियान्वयन होगा। उन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा जहां प्राकृतिक खेती को अपनाने वाले किसान, एसआरएलएम, पीएसीएस, एफपीओ जैसे संगठन पहले से सक्रिय हैं।

प्रधानमंत्री का धन्यवाद करते हुए राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत जी ने कहा कि यह मिशन देश के किसानों का जीवन बेहतर बनाने, जैव विविधता को संरक्षित करने के साथ ही कृषि क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम साबित होगा।

चौ० छोटूराम व आर्यान पेशवा राजा महेन्द्र प्रताप की जयन्ती पर उनका स्मरण

चौ० छोटूराम एक दृढ़ आर्यसमाजी व्यक्ति थे। वे अपने को **'वैदिकधर्मी'** मानते थे। उन्होंने जब **'सेंट स्टीफन'** कालेज दिल्ली में प्रवेश के लिए फार्म भरा तब उन्होंने धर्म के खाने में **'वैदिक'** लिखा। प्राचार्य ने इनको कहा कि यदि तुम वैदिक के स्थान पर कोई दूसरा धर्म नहीं लिखोगे तो कालेज में तुम्हारा प्रवेश नहीं होगा! लेकिन **'वैदिकधर्म'** में दृढ़ आस्था रखने वाले युवा छात्र छोटूराम ने अपना धर्म नहीं बदला। कालेज प्रशासन को इनका प्रवेश **'वैदिकधर्मी'** के रूप में ही करना पड़ा।

एक बार चौ० छोटूराम कालेज में यह प्रार्थना-पत्र देकर घर चले गए कि मैं कालेज की फीस नहीं दे सकता हूं। इसलिए कालेज छोड़ रहा हूं। मेरा नाम कालेज से काट दिया जाए। कालेज प्रशासन को बड़ा दु:ख हुआ कि एक होनहार छात्र कालेज छोड़कर जा रहा है। प्राचार्य ने तीन शिक्षकों को छात्र को वापिस बुलाने के लिए चौ० छोटूराम के घर पर भेजा तो उन्होंने देखा कि छोटूराम तो गांव की चौपाल में **'मूर्तिपूजा'** के विरुद्ध शास्त्रार्थ कर रहा है। इससे पता चलता है कि उनका **'वैदिकधर्म'** में कितना दृढ़ विश्वास था। शिक्षक उन्हें कालेज में लेकर आए और उनकी फीस माफ की गई।

चौ० छोटूराम के पैतृक घर गढ़ी में जमीन में दो फिट गहरा तथा 3×3 फिट चौड़ा बड़ा हवनकुंड बना हुआ है, जहां उनका परिवार हवन करता था। चौ० छोटूराम मंत्री रहते हुए आर्यसमाज के व्यक्तियों और संस्थाओं की भरपूर मदद करते थे। चौ० साहब बिछुड़े मुसलमानों को शुद्ध करके वापिस **'वैदिकधर्म'** में लाने में बहुत रुचि रखते थे। वे क्षेत्रीय **'शुद्धि-सभा'** के सचिव भी थे।

चौ० साहब आर्यसमाज के उच्चकोटि के सात फुटे विद्वान्, क्रांतिकारी साधु स्वामी स्वतंत्रानन्द में बडी श्रद्धा रखते थे। वे हमेशा उनसे आशीर्वाद लेते थे। चौ० साहब ने जिन्ना की गिरफ्तारी के आदेश दिए तो जिन्ना पंजाब से दुम दबाकर भाग खड़ा हुआ, लेकिन महात्मा गांधी 18 दिन तक आगा खां महल में बैठकर जिन्ना से रां-रां करता रहा और देश के टुकड़े करवा बैठा। उसको धमका दिया जाता तो उसमें इतनी शक्ति नहीं थी कि वह देर तक टिक पाता।

चौ० साहब ने गांधी जी को एक ऐतिहासिक लम्बा पत्र लिखा था, जिसमें उन्होंने लिखा था कि गांधी जी! भले ही आजादी कुछ देर से ही मिले लेकिन बंटवारा किसी कीमत पर भी न माना जाए। बंटवारा हुआ तो यह क्षेत्र युद्धों का अखाड़ा बन जाएगा। जब पंजाब बंटवारा नहीं चाहता, तो आप जबरदस्ती बंटवारा कैसे कर सकते हैं? मैं अपने पंजाब को किसी कीमत पर भी नहीं बटने दूंगा, लेकिन भारत का महादुर्भाग्य! वह महासाहसी त्वरित तर्कबुद्धि व्यक्तित्व भगवान् ने जल्दी ही हमसे छीन लिया। उसकी युद्धक्षेत्र बनने की कही बात सत्य सिद्ध हो रही है। अब अनन्तकाल तक लड़ते रहो पापिस्तान से। विकास का पैसा लड़ाई में जा रहा है। आज भी पाकिस्तान के घरों में चौ० छोटूराम की तस्वीरें लगाई जाती हैं। हम खून और गोत्र का वास्ता देकर उन्हें गले लगाएं तो वे हमारे से दूर नहीं हैं, लेकिन हम एक नहीं हैं। हमारा कोई एक नेता नहीं है। चौ० साहब ने जाट अधिकारियों को सचेत करते हुए एक पत्र लिखा था जिसमें उन्होंने शराब, रिश्वत, फैशन, चटोरपन, मनोरंजन के नाम पर अश्लीलता आदि पर चिन्ता व्यक्त की थी। हम आज चौ० साहब की शिक्षाओं से बहुत दूर हो चुके हैं। आओ हम अपनी उन्नत शिक्षा संस्थाएं बनाकर अपनी भावी पीढ़ी को गड्ढे में गिरने से बचाएं।

आर्यान पेशवा राजा महेन्द्र प्रताप

जैसा कि **'आर्यान पेशवा'** शब्द से प्रकट है कि राजा जी अपने को आर्य राजा मानते थे। जब 1914 में विश्वयुद्ध छिड़ने पर अंग्रेजों के विरुद्ध सैनिक तैयारी के लिए आप जर्मनी जाने के लिए निकले तो गुरुकुल शिक्षा के प्रवर्तक जगत् प्रसिद्ध स्वामी श्रद्धानन्द के ज्येष्ठ पुत्र हरिश्चन्द्र उनके साथ थे। गुरुकुल कांगड़ी के छात्र उन्हें स्टेशन पर छोड़ने आए थे। आपने अपनी सारी भूमि शिक्षा संस्थाओं तथा गरीबों में बांट दी थी। सबको समान शिक्षा के लिए आपने **'प्रेम महाविद्यालय'** स्थापित किया था, जिसमें जाति नहीं पूछी जाती थी। आपने गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन को भूमि दान की थी। अलीगढ़ विश्वविद्यालय भी आपकी ही दान की गई भूमि पर स्थापित है, लेकिन वहां जिन्ना की प्रतिमा लगाने के प्रयत्न तो हैं, लेकिन राजा महेन्द्रप्रताप की प्रतिमा लोगों के चाहने पर भी स्थापित नहीं की जा रही है। आपने ही **'संसार संघ'** बनाकर **'संयुक्त राष्ट्रसंघ'** की नींव डाली थी। **'आजाद हिंद फौज'** की नींव डालने वाले भी आप ही थे। स्वामी श्रद्धानन्द के बड़े बेटे हरिश्चन्द्र ने हिटलर के साथ मिलकर किया था। आज अपराधों बेरोजगारी और आतंक से त्रस्त भारत को राजा जी के कदमों पर चलने की आवश्यकता है।

—महावीर 'धीर' शास्त्री, प्रेमनगर, रोहतक-9466565162

यज्ञ हेतु दान देकर पुण्य के भागी बनें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ किया जाता है और पर्यावरण शुद्धि के लिए रोहतक जिले के सरकारी, गैर सरकारी विद्यालयों और गांव-गांव में यज्ञ व वेद प्रचार का आयोजन किया जाता है। इस महायज्ञ में आप लोग अपने बच्चों के जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ व अन्य उपलक्ष्यों पर दान देकर पुण्य के भागी बनें। संस्था सदैव आपकी आभारी रहेगी।

यज्ञदान हेतु बैंक खाता

ACCOUNT NAME - ARYA PRATINIDHI SABHA HARYANA
BANK NAME - PNB JHAJJAR ROAD ROHTAK
Account No. - 0406000100426205
IFSC - PUNB0040600
MICR - 124024002

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री .....

पता .....

.....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।
- सम्पादक उमेद शर्मा